

- iii सर्वनाम के साथ दो परसर्ग आने पर प्रथम को मिलाकर तथा दूसरे को अलग लिखना उचित होगा।

जैसे- उसके लिए, आपमें से आदि।

2. क्रियापद

क्रिया पद के अंतर्गत आने वाले प्रत्येक शब्द को अलग लिखना अपेक्षित है।

जैसे: पढ़ रहा था, जा चुका हो, आने वाला होगा।

3. योजक चिह्न

सुगम बोध की दृष्टि से कठिन संधियुक्त पदों से बचने के लिए योजक चिह्न का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे द्वि-अर्थक (द्व्यर्थक) त्रि-अक्षर (त्र्यक्षर)

4. श्रुतिमूलक 'य' और 'व' के क्रिया रूप।

- i श्रुतिमूलक 'य' और 'व' का प्रयोग क्रियारूपों में होता है, निम्नानुसार लिप्यंकित करना समुचित होगा-

जैसे: आया, आए, आई, आई

(हुवा) हुआ, हुए, हुई, हुई

- ii जहाँ 'य' 'व' मूलरूप से किसी शब्द के अंग होंगे वहाँ उनका त्याग संभव नहीं हो सकेगा।

जैसे:	पराया	=	पराये
	पहिया	=	पहिये
	रुपया	=	रुपये
	बायाँ	=	बायें
	दयामय	=	दयामयी

(पराए, पहिए, रुपए, बाएँ, दयामई, इत्यादि नहीं)

5. अनुस्वार (बिंदी या शिरोबिंदु)

- i 'य' से 'ह' तक के वर्णों के पूर्व अनुस्वार के स्थान पर व्यंजन वर्ण का प्रयोग अपेक्षित नहीं है।

जैसे: संवाद, संयोग, संरचित, संशय, संरक्षित, संसार, दंष्ट्रा, सिंह आदि। (सम्वाद, सम्योग, सन्शय आदि नहीं)।